(३) विष्णुपुराण

दार्शनिक महत्त्व की दृष्टि से यदि भागवतपुराण पुराणों की श्रेणी में प्रथम स्थान रखता है, तो विष्णुपुराण निश्चय ही द्वितीय स्थान का अधिकारी है। यह वैष्णव-दर्शन का मूल आलम्बन है। इसीलिए आचार्य रामानुज ने अपने 'श्रीभाष्य' में इसका प्रमाण तथा उद्धरण बहुलता से दिया है। परिमाण में यह न्यून होते हुए भी महत्त्व में अधिक है। इसके खंडों को 'अंश' कहते हैं। इसके अंशों की संख्या ६ है तथा अध्यायों की संख्या १२६ है। इस प्रकार परिमाण में इस भागवतपुराण का तृतीयांश मात्र है। प्रथम अंश में सृष्टि-वर्णन है (अ० ११—२०)। द्वितीय अंश (खंड) में भूगोल का बड़ा ही साङ्गोपाङ्ग विवेचन है। तृतीय अंश में आश्रम सम्बन्धी कर्तव्यों का विशेष निर्देश है। इसके तीन अध्यायों (अ० ४—६) में वेद की शाखाओं का विशिष्ट वर्णन है जो वेदाभ्यासियों के लिए बड़े काम की वस्तु है। चतुर्थ अंश विशेषतः ऐतिहासिक है जिसमें सोमवंश के अन्तर्गत ययाति का चरित वर्णित है। यदु, तुर्वसु, द्रुह्यु, अनु, पुरु,—इन पाँच प्रसिद्ध क्षत्रिय वंशों का भिन्न-भिन्न अध्यायों में वर्णन मिलता है। पंचम वंश के ३८ अध्याय में भगवान् कृष्ण का अलौकिक चरित वैष्णव-भक्तों का आलम्बन है। इस खंड में दशम स्कन्ध के समान कृष्णचरित पूर्णतया वर्णित है परन्तु इसका विस्तार कम है। षष्ठ अंश केवल आठ अध्यायों का है जिसमें प्रलय तथा भक्ति का विशेष रूप से विवेचन किया गया है।

साहित्यिक दृष्टि से यह पुराण बड़ा ही रमणीय, सरस तथा सुन्दर है। इसके चतुर्थ अंश में प्राचीन सुष्ठु गद्य की झलक देखने को मिलती है। ज्ञान के

Scanned with CamScanner

साथ भक्ति का सामञ्जस्य इस पुराण में बड़ी सुन्दरता से दिखलाया गया है। विष्णु की प्रधान रूप से उपासना होने पर भी इस पुराण में साम्प्रदायिक संकीर्णता का लेश भी नहीं है। भगवान् कृष्ण ने स्वयं महादेव शिव के साथ अपनी अभिन्नता प्रकट करते हुए अपने श्रीमुख से कहा है :—

योऽहं स त्वं जगच्चेदं, सदेवासुररमानुषम्।
मत्तो नान्यदशेषं यत्, तत्त्वं ज्ञातुमिहार्हसि॥
अविद्यामोहितात्मानः पुरुषा भिन्नदर्शिनः।
वदन्ति भेदं पश्यन्ति, चावयोरन्तरं हर॥

(५।३३।४८-९)

सुन्दर भाषण के लाभ का यह कितना अच्छा वर्णन है :—

हितं, मितं, प्रियं काले, वश्यात्मा योऽभिभाषते।
स याति लोकानाह्लादहेतुभूतान् नृपाक्षयान्॥

Scanned with CamScanner